International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 8 Issue 1 Ser. I || January 2019 || PP 71-73

"तुलसी साहित्य की प्रासंगिकता"

डॉ. दयानंद शास्त्री

भूमिकाः-

गोस्वामी तुलसीदासजी हिन्दी साहित्य के गौरवशाली महाकवि है । वे पूर्व मध्यकाल की सगुण काव्यधारा से संबंध रखते हैं । रामभक्ति शाखा के प्रवर्तक माने जाते हैं । उनके आराध्य देव दशरथ पुत्र राम हैं । इन्हें रामभक्ति का सबसे श्रेष्ठ कवि माना जाता है । इन्होंने अपनी रचनाओं में राम के प्रति अनन्य भक्तिभाव को प्रकट किया है । तुलसीदास ने विद्वानों, आचार्यों द्वारा बताये गये भक्ति के आधार को स्वीकार किया और कहा कि राग और क्रोध को जीतकर नीति पथ पर चलते हुए राम की प्रीति करना ही भक्ति है । भक्ति का आलंबन ही भक्त को इष्ट होता है । इसीलिए तुलसी के इष्टदेव राम ही है । राम विष्णू के अवतार है । तुलसी के राम निगुर्ण-सगुण दोनों ही रूपों में नजर आते हैं । "सगुनहि अगुनहीं नहिं कछु भेदा । गावहिमुनि पुरान बुधवेदा"[1]

संस्कृति के अनन्य गायक तुलसीदास को उस समय के परिस्थितियों का स्पष्ट बोध था कि परिवर्तन की प्रक्रिया अत्यंत तीव्र गति से चलती है । सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक तथा साहित्यिक सभी स्तरों पर यह परिवर्तन स्पष्ट लक्षित होता है। परिवर्तन की कोई भी दिशा तुलसी की प्रतिभा एवं प्रत्यक्ष बोध की महानता के कारण अनदेखी न रह सकी । फ़लतः तुलसी ने युग की समग्रता को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए 'रामचरितमानस' जैसे महाकाव्य का प्रणयन किया ।

यह वह काल था जब दो परस्पर विरोधी संस्कृतियाँ भारतीय इतिहास के समय टकरा रही थी । एक में सत्ता की अनुकूल राजनीति और विजेता की शक्ति थी । दूसरी आंतरिक कलह की शिकार पराजित जाति की मनोव्यथा से बोझिल थी । सन् 1574 मुगल सम्राट अकबर शासन के यौवन के समय 'रामचरितमानस' की रचना का आरंभ हुआ ।तुलसी जैसे युगदृष्टा साहित्यकार को परिवर्तित परिस्थिति के साथ समझौता कर पाना अत्याधिक दुसह कार्य था । उन्होंने अपनी कृतियों के माध्यम से यथार्थता को स्वीकार करते हुये आक्रोश व्यक्त किया तथा अपने चरित्रों के माध्यम से विकल्प प्रस्तुत करने का भी सफ़ल प्रयत्न किया जिसकारण ही युगबोध के अभाव में तुलसी का 'रामचरितमानस' चार सौ वर्ष बाद भी मुल्यांकन की अपेक्षा रखता है । तुलसी ने परंपरा का अंधानुकरण न करके युगीन नवीनता के प्रति भी दूराग्रह नहीं दिखाया है । सही तौर अध्ययन करने वालों की दृष्टि से तुलसी को रूढीग्रस्त परंपरावादी मान लेना उनके प्रति अन्याय होगा ।

भारतीय साहित्य का इतिहास जितना पुराना है उतनी ही पुरानी 'रामचरितमानस' की कथा है । यह कथा आदि-कवि वाल्मिकि की लेखनी से अस्तित्व में आयी परंतु तुलसी तक आते-आते उसके स्वरूप, भाषा, छंद तथा उद्देश में भी परिवर्तन आया । साहित्यकार का युगबोध ही परिवर्तन के मूल में क्रियाशील रहता है। 'रामचरितमानस' के प्रतिपाध्य का संबंध प्रत्येक युग से होने के कारण ही रामकथा की लोकप्रियता अभी-भी बनी हुई यह प्रासंगिक है । कुंभ-कर्ण के आहार-विहार का मानस के पाठकों से कुछ भी लेना-देना नहीं । यह उस व्यवस्था का प्रतिक है जिसमें कुछ लोग अधिक खाकर तथा कुछ लोग भूखे मरते हैं । प्राचीन कथा का आधार लेते हुये भी तुलसी ने उसे युग की वाणी दी है ।

'रामचरितमानस' पराजित जाति का काव्य होने के कारण एक ऐसी आदर्श की आवश्यकता थी जो निराशा के गहन अंधःकार से निकालकर प्रकाश की किरण का दर्शन करा सके । उस समय भारतीय पौरूष हतप्रभ होने के कारण हर मोर्चे पर उसकी हार हो रही थी । ऐसे समय में व्यक्ति अथवा जाति नही बल्कि इतिहास लडता है । उस समय के देश का इतिहास पराजय का इतिहास था। इसप्रकार की विपत्ति की स्थिति

में निर्वासित राम की विजययात्रा ही प्रेरणादायिनी सिध्द हो सकती थी । इस विजययात्रा के मूल्य निर्धारण के स्थापन की सर्वाधिक आवश्कता तुलसी के युग को थी । 'रामचरितमानस' की तुलसी के मानस में जिस समय भुमिका बन नही थी, उस समय राम की अपेक्षा कृष्णा का चरित्र अधिक लोकप्रिय था । विशेषताओं के कारण समुचे देश को 'रामायण' की अपेक्षा महाभारत अपनी ओर आकर्षित करने में समर्थ हैं । फ़िर भी 'रामचरित' को तुलसी ने अपनी रचना का आधार बनाया । उस युग को पराकाष्टा पर पहुँचाने वाली तुलसी की रचनाएँ (रामचरितमानस, विनयपत्रिका, गीतावली, दोहावली, बरवैरामायण, हनुमानचालिसा) रचनाएँ मानवीय पीड़ा और करूणा की गायक है ।

तुलसी के सामने निर्वासित राम के चरित नायक को चुनते समय अवमानित राजस्थान तूफानों के बीच संघर्षरत गौरवदीप, महाराणा प्रताप के रूप में जल रहा था, क्योंकि उसके पास सेना तथा धन-वैभव कुछ भी नहीं बचा था । राजधानी को त्यागकर वनवासी होकर कोल-भीलों के बीच उन्हीं की सहायता पर रहकर घास की रोटियों को खाकर जीवनयापन करते हुए आदर्शों के लिए जूझना पड रहा था । राम और लंकेश की युध्द योजना में साधनहीन महाराणा प्रताप तथा दिल्लीश की युध्द झाँकी सहज ही देखी जा सकती है । जिसप्रकार राम-वनगमन से आयोध्या उजड़ी, उसीप्रकार महाराणा के गमन मेवाड़ उजड़ा । इस प्रकार तुलसी का साहित्य प्रासंगिक है । तुलसीदासजी उसकाल में रामसदृश्य केन्द्रीय व्यक्तित्व की आवश्यकता का अनुभव कर रहे हैं । गुरू रामदास की कृपा के परिणामस्वरूप ही शिवाजी जैसे शक्ति-शाली केन्द्रीय व्यक्तित्व का निर्माण हुआ । 'रामचरित' की उपलबध्दि गुरू रामदास ही थे । "खिले गुलाब की उत्फुल्लता सभी देखते हैं । परन्तु वह उसकी कितनी प्रक्रिया का परिणाम है । यह कम लोग ही सोचते हैं"।[2] अतः समर्थ गुरू रामदास के मानस मंथन का परिणाम ही शिवाजी का नेतृत्व था ।

महाभारत की द्रौपदी तथा सोलह सहस्र रानियों और आठ पटरानियों वाले नायक कृष्ण नारीविषयक लोलुपता और बहुपत्नीत्व के शिकार समाज के लिए आदर्श नहीं हो सकते थे । अग्नि परिक्षा में सफ़ल होनेवाली सीता तथा पर-नारी की ओर न देखनेवाले मर्यादा पुरूषोत्तम राम का चरित्र ही उनके लिए आदर्श हो सकता था । तुलसी का उदय मध्यकालीन इतिहास में एक अपूर्व घटना थी जिसने तत्कालीन अनुकूल के धरातल पाकर कुछ सर्जनात्मक तत्वों को खोज निकाला । आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार :- "भारतवर्ष का लोक नायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो । भारतीय जनता में नाना प्रकार की परस्पर विरोधीनी संस्कृतियाँ, साधनाएँ, जातियाँ, आचार-विचार और पध्दतिया प्रचलित है । तुलसीदास स्वयं नानाप्रकार के सामाजिक स्तरों में रह चुके थे । उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है उसमें केवल लोक और शास्त्र का ही समन्वय नहीं है अपितु गार्हस्थ्य और वैराग्य का, भक्ति और ज्ञान का, भाषा और संस्कृति का, निर्गुण और सगुन का, पुराण और काव्य का, भावावेग और अनासक्त चिंता का समन्वय 'रामचरितमानस' के आदि से अंत तक दो छोरों पर जानेवाली पराकोटियों को मिलाने का प्रयत्न है ।"[3] जो आज भी प्रासंगिक है ।

उपसंहारः-

अंत में मैं यही कहना चाहता हूँ कि, राजा और प्रजा के संबंधों पर दिये गए उनके विचार तथा तुलसी के रामराज्य की कल्पना आज भी बासी नहीं हो पायी है । हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को एक अर्से तक राम-राज्य की कल्पना ने प्रेरणा प्रदान की । तुलसी ने अपने कृतियों में अपनी युग के दासता से मुक्ति पाने के लिए आव्हान किया । उसका परिणाम भी देर से ही सही, परन्तु सामने आया गांधीजी के नेतृत्व में ही हमें स्वराज्य मिला । राष्ट्रीय आंदोलन का मूलमंत्र जिन्होंने राम-राज्य की स्थापना को ही बनाया था । यही तुलसी की प्रासंगिकता तथा युगबोध है । तत्कालीन समाज की झाँकी और शासन की त्रुटिपूर्ण नितीयों के 'रामचरितमानस' में अनेक स्थल भरे पड़े हैं । तुलसी के माध्यम से प्राप्त रामकथा बराबर आज भी प्रासंगिक बनी है ।

संदर्भसूचीः-

1. 'मानस' : बालकांड-तुलसी-पृ.सं.115
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास-डॉ.सुधाकर, पृ.सं. 197
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र-पृ.सं. 177

-डॉ. दयानंद शास्त्री
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
एन.व्ही.पदवी महाविद्यालय,
कलबुरगि
मो. 9591634748
Article No. 1,
2020